कर्नाटक राज्य अक्कमहादेवी महिला विश्वविद्यालय, विजयपुर

“इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यासों में किसानों की आत्महत्या की समस्याएँ”

पीएच.डी हिंदी उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रस्ताव शोध की रूपरेखा

2022 - 23

शोधार्थी

अन्नपूर्णा भोसले

पंजीयन संख्या : KSAWU/Ph.d/ 633/2022-23

शोध निर्देशक

डॉ. अमरनाथ प्रजापति

सहायक प्राध्यापक

विभागाध्यक्ष

प्रो. श्रीमती राजु.एस.बागलकोट

प्राध्यापक

हिंदी विभाग

कर्नाटक राज्य अक्कमहादेवी महिला विश्वविद्यालय, विजयपुर

प्रस्तावना

भारत मूलतः कृषि प्रधान देश है| अर्थव्यवस्था का मूल आधार ही कृषि और किसान है| किसान देश का अन्नदाता कहलाता है| आजादी से पहले और आजादी के बाद, आज तक किसान अत्यंत संघर्षमय जीवन जीता आ रहा है| किसान को आज तक न्याय नहीं मिल पाया है| भूतपूर्व प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री जी का नारा "जय जवान जय किसान" सिर्फ नारेबाजी में ही सिमटकर रह गया है| आज भी किसान सिर्फ समस्याओं से घिरा हुआ है|

राष्ट्रीय किसान नीति 2007 में एम.एम.स्वामीनाथन की अध्यक्षता में सौपीं गयी| इसमें किसानों की परिभाषा कुछ प्रकार दी गई है –"किसान उस व्यक्ति को माना जायेगा जो कृषि वस्तुओं का उत्पादन करता है| कृषक, कृषि मजदूर, मुर्गीपालन, पशुपालन, मधुमक्खी पालनकर्ता, चरवाहा आदि व्यक्ति इसमें शामिल है|"

इक्कसवीं सदी के प्रमुख मुद्दों में "किसान आत्महत्या" भी एक प्रमुख विषय है| शाइनिंग इंडिया और आधुनिकता के नाम पर बढ़ती हुई प्रमुख समस्याओं में बाजारवाद, उपभोक्तवाद, प्राकृतिक आपदा, आसमान वितरण, सरकार की नई नीतियाँ इन सब में फँसकर किसान जिंदा रहे तो कैसे? भूमंडलीकरण, प्राकृतिक आपदा, सरकार की लापरवाही आदि विषयों के चलते किसान मुश्किल में पड़ रहा है| वह अपना धैर्य खो रहा है, क्योंकि प्रमुख रूप से उसकी फ़सल को लागत मूल्य नहीं मिल रहा है| मल्टीनेशनल कंपनियों से बीज खरीदकर, उसके लिए कीटनाशक, खाद भी उसी कंपनी का महँगा खरीदना पड़ रहा है| फिर भी फ़सल अच्छी नहीं हो पाती है| गलती से भी किसान अगर इसके खिलाफ केस दर्ज कराने जाए तो एक और नई परेशानी मोल लेता है| इनके साथ ही प्राकृतिक आपदा, असमान वितरण, सरकार की नई नीतियाँ इन सब में किसान फँसा हुआ है| ये सारे हालात किसानों को आत्महत्या करने के लिए मजबूर करते है| खेती किसान की है पर उसके हाथ खाली है| गरीबी, कर्ज, अशिक्षा,भूख, बेटी का विवाह तथा दहेज़ प्रथा, बेटे की पढाई इन सब समस्याओं से किसान जूझ रहा है|

किसान से संबंधित सरकारी घोषणाएँ एवं सहूलियत सिर्फ फाईलों में सिमटकर रह जाते हैं| अगर गलती से भी राहत मिल जाता है तो वह भी मुट्ठी भर भी नहीं मिल पाता| आजादी से पूर्व किसान जमींदारों या साहूकारों से कर्ज लेकर उनके ऋण में फँस जाते थे| किसान आजकल सोसाईटी से बैंकों से ठगे जा रहे हैं| धोखा वही है, बस चहरे बदल गये हैं|

इन प्रमुख समस्याओं पर इक्कीसवीं सदी में कुछ उपन्यासों ने समाज का ध्यान खींचने का प्रयास किया है| जिनमें कुछ चर्चित और प्रमुख उपन्यास है – संजीव का 'फाँस', शिवमूर्ति का 'आखरी छलांग', पंकज सुबीर का 'अकाल में उत्सव', एम.एम.चन्द्रा का 'यह गाँव बिकाऊ है',सुनील चतुर्वेदी का 'कालीचाट' आदि| भारत के कई राज्यों में किसान आत्महत्या की समस्या बढ़ती जा रही है, जैसे महाराष्ट्र, कर्नाटक, हरियाणा, आंध्र प्रदेश, उत्तर प्रदेश आदि| इनमें महाराष्ट्र किसान आत्महत्या के लिए पहले स्थान पर है| महाराष्ट्र में कपास की खेती ने किसानों को कहीं का नहीं छोड़ा| इस विषय पर नज़र डालता हुआ उपन्यास है संजीव का 'फाँस'| किसानों की मूलभूत समस्याएँ खाद, पानी, बिजली, बीज तथा कर्ज की समस्या से आत्महत्या की स्थिति को बड़े यथार्थ रूप में संजीव जी ने पाठकों के सामने रखा है| कर्ज की समस्या को शिबू के माध्यम से इस प्रकार अभिव्यक्त किया है –"अगले महीने 20 तारीक को बैंक में पच्चीस हज़ार का कर्ज अदा करना है, आज गुडी पड़वा है, मराठी नव वर्ष फिर भी मुझे कर्ज के बारे में सोचना पड़ रहा हैं|" किसान हमेशा ऋण में रहता है, ब्याज तो भरता है पर असल में बेटे को चुकाने के लिए विरासत में छोड़ जाते है| कर्ज के कारण ही शिबू एवं सिंधुताई जैसे कई किसानों ने आत्महत्या कर ली| संजीव का फाँस खतरे की घंटी है और आत्महत्या के विरोध में दृढ़ आत्मबल प्रदान करने वाला जीवजल भी है|

किसान जीवन को केंद्र में रखकर पंकज सुबीर ने 'अकाल में उत्सव' उपन्यास की रचना की है| इस उपन्यास में ग्रामीण जीवन विशेषत: किसानों के जीवन पर प्रकाश डाला गया है| किसान अपनी छोटी सी जमीन में बोए हुए फ़सल का निरीक्षण करता है, उस फ़सल से कई उम्मीद भी रखता है| बैंक और दलाल मिलकर फ़र्जी किसान क्रेडिट कार्ड से 30,000 का लोन रामप्रसाद के नाम पर लिए थे जिसको उन्होंने वापस नहीं भरा था तो भरपाई के लिए नोटिस मिला रामप्रसाद को| साथ ही बेवजह बारिश में ओले पड़कर रामप्रसाद का फसल भी नष्ट हो जाता है| रामप्रसाद इसका रिपोर्ट लिखवाने पंचायत जाता है तो पटवारी उससे दो हजार तीन सौ रुपये रिश्वत माँगता है| इस सदमें से रामप्रसाद बाहर नहीं निकल पाता और कुँए में रस्सी से लटक कर आत्महत्या कर लेता है| प्रशासन रामप्रसाद को मानसिक रोगी घोषित कर केस को बंद कर देता है| 'अकाल में उत्सव' उपन्यास में आधुनिक सभ्य समाज में पशुओं से भी बत्तर जीवन जीने वाले किसानों के संघर्षमय जीवन पर प्रकाश डाला गया है|

शिवमूर्ति जी का ‘आखरी छलांग’ किसान जीवन के संघर्ष की गाथा है| यह उपन्यास प्रेमचंद जी के परंपरा की एक कड़ी के रूप नज़र आता है| किसान जीवन की अनेक समस्याओं का उलझा हुआ जाल है| इस उपन्यास का कथा नायक पहलवान है| नई विकास नीतियों के कारण ही पहलवान की जिंदगी उलझ सी गयी है| दो साल से अपनी बेटी के लिए योग्य वर ढूंढ रहा है पर सफ़ल नहीं हुआ| बेटे की पढ़ाई का ख़र्च उठा नहीं पा रहा है| ऊपर से हर दो महीने में आने वाला ट्यूबवेल का बिल| इन सब चीजों के चलते पहलवान महसूस करता है कि जैसे नहर के पेट भीतर सिल्ट भर जाती है उसी तरह किसान की तक़दीर में साल दर साल सिल्ट भर ही जाता है| किसान जीवन में भी सिल्ट भरती जा रही है| अपनी समस्याओं से तंग आकर पहलवान इस व्यवस्था से प्रश्न करता है–“सारे हालात तो मर जाने के है| जिन्दा कैसे रहा जाए|”

एम.एम.चन्द्रा जी का ‘यह गाँव बिकाऊ है’ उपन्यास हास्य एवं व्यंग्य को माध्यम बनाकर रचा गया है| यह एक नई किसान संघर्ष गाथा को पाठकों के सामने प्रस्तुत करता है| आधुनिक युग में आर्गानिक खेती तथा महंगे खाद, बीज, कीटनाशक खरीदकर भी किसान सफ़ल नहीं हो पाता है| बल्ली जैसा पचास बीघे खेती का बड़ा किसान भी नष्ट न सह पाया और अपने ही ट्यूबवेल के पास वो पेड़ पर फाँसी लगाकर आत्महत्या कर लेता है| आजादी के पश्चात बदलाव की उम्मीद में बैठे भारतीय किसानों को सिर्फ निराशा ही हाथ लगी| इस घटना से जागरूक होकर नंगला गाँव के युवक अघोष, सलीम, कुक्कू और राजेश ने मिलकर ‘किसान सभा‘ का गठन किया| नई आन्दोलन से सरकार को जगाने का प्रयास भी किया गया| नई किसान नीति का संपूर्ण विरोध इस उपन्यास के माध्यम से किया गया है| समस्या का विरोध और समस्या से निकलने का रास्ता भी उपन्यास में दिखाकर, पाठकों का आत्मबल बढ़ाने में यह उपन्यास सार्थक साबित हुआ है|

इक्कीसवीं सदी के उपन्यासों में किसान त्रासदी की ज्वलंत समस्या एवं किसान आत्महत्या को कई लेखकों ने समाज के सामने रखा है| आज भी समाज में किसानों की आत्महत्या का सिलसिला जारी है| लेकिन एक समय ऐसा आएगा जब किसान आत्महत्या न करते हुए संघर्ष करके अपनी जिंदगी को सुख शांति से जियेगा|

शोध का महत्व एवं उद्देश्य

भारत जैसे बड़े देश में 70% प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से लोग कृषि से जुड़े हैं और उसी पर आश्रित है| देश में कुल 11.2% किसान आत्महत्या कर रहे हैं|

किसान हमारे अन्नदाता है| उनकी आत्महत्या करना हमारे लिए शर्म की बात है| इसके लिए ख़ास कर केंद्र एवं राज्य सरकारों को किसानों की आत्महत्या रोकने के लिए युद्धस्तरिय कोशिश करने की अधिक आवश्यकता है| यह एक सामाजिक समस्या है| किसानों में जीवन जीने के लिए हौसला एवं दृढ़ता लाना, किसानों पर पड़े आधुनिकीकरण, भूमंडलिकरण, प्राकृतिक आपदा, बाजारवाद का प्रभाव पश्चिमीकरण के प्रभाव का मूल्यांकन तथा समस्या से संबंधित सरकारी नीतियाँ,घोषणाएँ एवं रियायतों की सफलता का मूल्यांकन करना ही शोध का प्रमुख उद्देश्य है|

शोध की प्रासंगिकता

कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की पहचान रही है| भारतीय अर्थव्यवस्था की मूल रीढ़ हमेशा से ही कृषि रही है| कृषि को हम उपेक्षित कर देंगें तो भारतीय अर्थव्यवस्था डगमगा जाएगी| अभी भी भारत के 68 .84%(2011 की जनगणना) लोग गाँव में रहते है और कृषि पर ही निर्भर हैं| कृषक अगर परेशान होगा, धैर्य खो देगा, आत्महत्या करने लगेगा तो पूरा समाज अपने आप कमज़ोर पड़ जाएगा| इस शोध के जरिए किसान आत्महत्या के विभिन्न पहलुओं पर विश्लेषण किया जायेगा तथा इस समस्या से बाहर निकलने के रास्तों पर प्रकाश डाला जायेगा| अतः मेरा शोध वर्तमान समय में अत्यन्त ही महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक है|

प्रस्तुत शोध की रूपरेखा

प्रथम अध्याय : भारत में किसान आंदोलन की पृष्ठभूमि

1.1 भारत में प्रमुख किसान आन्दोलन

1.1.1 अवध किसान आन्दोलन

1.1.2 चंपारण आन्दोलन

1.1.3 बारडोली आन्दोलन

1.1.4 बिजोलिया आन्दोलन

1.2 किसान आंदोलन से जुड़े प्रमुख व्यक्ति

1.2.1 सहजानंद सरस्वती

1.2. 2 बाबा रामनंद

1.2. 3 लोहिया

1.2. 4 राहुल संकृत्यायन

दूसरा अध्याय : हिंदी उपन्यासों में किसानों की अभिव्यक्ति

2.1 प्रेमचंद पूर्व युग

2.2 प्रेमचंद युग

2.3 प्रेमचंदोत्तर युग

2.4 समकालीन युग

तीसरा अध्याय : किसान आत्महत्या पर आधारित प्रमुख उपन्यासों का कथ्यात्मक विश्लेषण

3.1 फाँस

3.2 आखरी छलांग

3.3 हलफनामें

3.4 कालीचाट

3.5 यह गाँव बिकाऊ है

3.6 अकाल में उत्सव

3.7 अगम बहै दरियाव

3.8 ढलती साँझ का सूरज

चथुर्त अध्याय : इक्कीसवीं सदी के उपन्यासों में किसानों की आत्महत्या की समस्याएँ

4.1 सामाजिक समस्या
4.2 आर्थिक समस्या
4.3 राजनैतिक समस्या
4.4 सांस्कृतिक समस्या
4.5 कर्ज का दबाव
4.6 प्राकृतिक विपदा
4.7 खेती पर निर्भरता
4.8 सरकारी योजनाओं से धोखा

पंचम अध्याय : किसान आत्महत्या के आंकडें

5.1 समाचार पत्र के संदर्भ में
5.2 पत्रिकाएँ
5.3 गजट
5.4 सामाजिक **आंकडें**

छठा अध्याय : किसान आत्महत्या रोकने के विभिन्न उपाय

6.1 सरकारी योजनाएँ
6.2 लोक जागरण
6.3 संस्थाओं का सहयोग
6.4 मीडिया का प्रभाव

सातवाँ अध्याय : उपन्यासों की भाषा

7.1 किसानों की भाषा
7.2 नेताओं की भाषा
7.3 नौकरशाही लोगों की भाषा
7.4 जमींदारों की भाषा
7.5 लोक व्यवहार की भाषा

उपसंहार

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

आधार ग्रंथ

1. एम.एम.चन्द्रा - यह गाँव बिकाऊ है, डायमंड पाकेट बुक्स (प्रा)लि नई दिल्ली,संस्करण, 2019
2. पंकज सुबीर - अकाल में उत्सव, शिवना प्रकाशन, सीहोर, बारहवां संस्करण, 2022
3. मधु कांकरिया- ढ़लती सांझ का सूरज, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, दूसरा संस्करण, 2022
4. राजूशर्मा - हलफ़नामें, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2016
5. शिवमूर्ति - आखिरी छलांग, नया ज्ञानोदय पत्रिका (जनवरी अंक), 2008
6. शिवमूर्ति - अगम बहै दरियाव,राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली, दूसरा संस्करण, 2024
7. सुनील चतुर्वेदी - कालीचाट,अंतिका प्रकाशन,गाजियाबाद,संस्करण, 2015
8. संजीव - फाँस,वाणी प्रकाशन नई दिल्ली,तृतीय संस्करण, 2024

संदर्भ एवं सहायक ग्रन्थ सूची

1. अमरीक सिंह दीप (अनुवादक) - जमिनोंवाले, विकास प्रकाशन कानपुर, प्रथम संस्करण, 2021
2. आचार्य रामचंद्र शुक्ल - हिंदी साहित्य का इतिहास, प्रभात पेपरबैक्स, नई दिल्ली, संस्करण, 2021
3. किशन पटनायक - किसान आन्दोलन दशा और दिशा, प्रथम संस्करण, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण, 2009
4. डॉ.चन्द्रमा प्रसाद (संपादक) – शिवमूर्ति एक मूल्यांकन, विकास प्रकाशन कानपुर, प्रथम संस्करण, 2024
5. डॉ.जयशंकर रामजीत पांडेय (संपादक) - महिला सशक्तिकरण और भारतीय समाज माया प्रकाशन ,कानपुर, प्रथम संस्करण, 2025
6. डॉ.नगेन्द्र - हिंदी साहित्य का इतिहास, मयूर बुक्स नोयडा, संस्करण, 2018
7. डॉ.सुभ्रांशिष बारिक - भूमंडलीकरण और हिंदी उपन्यासों में चित्रित किसान, शुभम् पब्लिकेशन कानपुर, प्रथम संस्करण, 2023
8. पी.आर.तलेकर - इंटरनेशन जर्नल्स आफ एडवांस एंड अप्लाइड रिसर्च, यंग रिसर्चर असोसिएशन, कोल्हापुर, संस्करण, 2024
9. प्रेमचंद - गोदान,वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2004

10. प्रो.सावले संजय - उपन्यासकार संजीव किसान आत्महत्या : यथार्थ और विकल्प, वाणी प्रकाशन ,नई दिल्ली ,संस्करण, 2015
11. फणीश्वरनाथ रेणु - मैला आँचल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2016
12. बच्चन सिंह - आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, पहला संस्करण, 2019
13. बरैया सिंह किरण - फाँस उपन्यासों में किसान एवं आदिवासी संघर्ष, विकास प्रकाशन कानपुर, प्रथम संस्करण, 2019
14. मिथिलेश्वर - तेरा संग कोई नहीं, लोकभारती प्रकाशन प्रयागराज, दूसरा संस्करण, 2022
15. मैनेजर पांडेय - भक्ति आन्दोलन और सूरदास का काव्य, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण, 2023
16. रामदरश मिश्र - पानी के प्राचीर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण, 2023
17. वीरेंद्र जैन - डूब, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण,1998
18. शेख शेहनाज बेगम अहेमद - वर्तमान हिंदी साहित्य में किसान विमर्श और मीडिया की भूमिका, संकल्प प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण, 2021
19. सुभाष चन्द्र कुशवाहा - अवध किसान आन्दोलन 1920 से 1922 ई, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण, 2018
20. सुभाष धन्नाजी कट्टे - हिंदी उपन्यासों में चित्रित कृषक जीवन, विकास प्रकाशन कानपुर, प्रथम संस्करण, 2018
21. हरिशंद्र चौधरी - चंपारण का किसान आन्दोलन और गाँधी, प्रकाशन संस्थान नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 2016

पत्र -पत्रिकाएँ

1. देश का सबसे लम्बा किसान आंदोलन ‘संसद में कानून वापस‘- दैनिक भास्कर - 7 दिसंबर 2021
2. डॉ.अमिता प्रकाश (संपादक) - साहित्य में गाँधी एवं गाँधी का साहित्य विशेषांक(बोहल शोध मंजूषा), गुगनराम एजुकेशनल एंड सोशल वेलफेर सो भिवानी, हरियाणा, 2023